

इस्लाम में पूजा में रियायतें

रेटिंग:

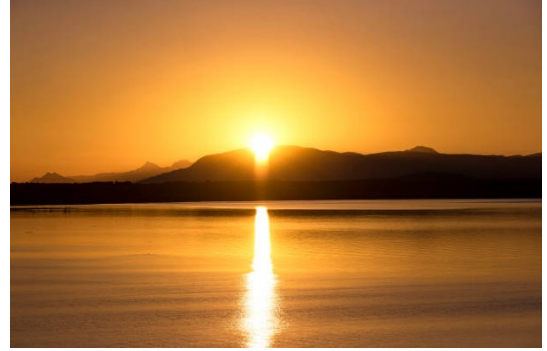
विवरण:

द्वारा: Aisha Stacey (© 2019 IslamReligion.com)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधति: 04 Nov 2021

इस्लाम का पंथ एक धर्म से कहीं बढ़कर है; यह जीवन जीने का एक तरीका है। हमारे दैनिकी जीवन का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जसि इस्लाम में न बताया गया हो। कुरआन और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) की परंपराएं हमें सिखाती हैं कि कैसे अपना जीवन सर्वश्रेष्ठ तरीके से जीना है। सबसे



महत्वपूर्ण यह है कि हमें इस्लाम के पांच स्तंभों और अपने सभी कार्यों द्वारा ईश्वर की पूजा करना सिखाते हैं। इस प्रकार, वह लोग जिन्होंने इस्लामी पंथ की सतह को जाना है वो समझ सकते हैं कि इस्लाम नियमों और कानूनों का धर्म है, जैसे यह करना है और यह नहीं करना है। हालांकि, सच्चाई से दूर कुछ नहीं हो सकता है।

इस्लाम सबके लिए बनाया गया है, उनके लिए भी जिनकी शारीरिक और मानसिक क्षमता चरम पर है, और उनके लिए भी जिनके जीवन के कुछ पहलु मुश्किल भरे हैं। वास्तव में, जो लोग जीवन की भागदौड़ का सामना नहीं कर सकते, वे इस्लाम को तनाव मुक्त पाते हैं। इस्लाम के दशा-नरिदेश, कुरआन और पैगंबर मुहम्मद की परंपराएं, आराम देने और जीवन को आसान बनाने के लिए बनाये गए हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस्लामी कानून मानवजात को लाभ पहुंचाने के लिए बनाया गया है, और पैगंबर मुहम्मद और उनके सभी कार्य और सीख मानवजात के लिए एक दया है।

"...ईश्वर तुम्हारे लिए सुविधा चाहता है और असुविधा नहीं चाहता..." (कुरआन 2:185)

पैगंबर मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को खुद के प्रति और नए परिवर्तित विश्वासियों के प्रति सहज होने की सलाह दी। उन्होंने कहा, "???? ???? ???? ?? ?? ?? ???? ???? ???? ???? ?? ???? ???? ???? ???? ??"^[1] और "लोगों के साथ सहज व्यवहार करें और उन पर कठोर न हों; उन्हें

खुशखबरी दें और उन्हें घृणा से न भरें।"

ईश्वर चाहता है कि हिम उसकी पूजा करें और उसके दशानरिदेशों का पालन करें, लेकिन वह नहीं चाहता कि हिम पर अधिक बोझ पड़े। वह चाहता है कि स्वर्ग का रास्ता आसान हो, और इसके लिए इस्लाम में एक सदिधांत है जो कहता है कि "?????? ?? ??? ?????? ??". इसका मतलब यह है कि अगर कोई मुश्किल में है तो इस्लाम के कानून उसे रियायत देते हैं। आमतौर पर चोट, बीमारी, बुढ़ापा और यात्रा से जुड़ी परस्थितियों में रियायत दी जाती है।

वुजू और प्रार्थना में रियायतें

बीमार लोगों की प्रार्थना में ईश्वर की रियायत एक उत्कृष्ट उदाहरण देखा जा सकता है जसिमें ईश्वर ने आसतकियों की सहायता के लिए रियायत दी है। जब कोई बीमार व्यक्ति खड़े होकर प्रार्थना करने में असमर्थ है, तो वह बैठकर प्रार्थना कर सकता है। यदि वह बैठकर प्रार्थना करने में असमर्थ है, तो वह लेटकर एक तरफ करवट लेकर प्रार्थना कर सकता है। यदि वह करवट लेकर प्रार्थना करने में असमर्थ है, तो वह अपनी पीठ के बल लेटकर प्रार्थना कर सकता है। इन रियायतों से यह स्पष्ट होता है कि ईश्वर किसी व्यक्ति पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालता।

हर मुसलमान को प्रार्थना से पहले वुजू करना चाहिए। इस मामले में भी ईश्वर ने बीमार या घायल लोगों को रियायत दी है। यदि व्यक्ति पानी का उपयोग करने में असमर्थ है, या यदि पानी के उपयोग से उसकी सुरक्षा या ठीक होने में परेशानी होगी, तो वह साफ़ मट्टी पर हाथ रख के और फिर चेहरे और हाथों को पोंछकर सूखी वुजू कर सकता है।

बीमारी या चोट के कारण होने वाली कठनाई प्रार्थना में शामिल होने का एक वैध बहाना है। यदि कोई व्यक्ति बीमार या घायल है, तो उसे दोपहर और शाम और रात के समय की प्रार्थना में पहले या बाद की प्रार्थना के समय शामिल होने की अनुमति है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि उसके लिए सबसे आसान क्या है। हालांकि यह जरूरी है कि सभी प्रार्थना पूरी तरह पढ़नी चाहिए क्योंकि छोटी प्रार्थना की रियायत सिर्फ यात्री के लिए है।

शेख अल-इस्लाम इब्न तैमियाह ने कहा, "प्रार्थना को छोटा करने का कारण केवल यात्रा है, और जब कोई यात्रा न कर रहा हो तो इसकी अनुमति नहीं है। प्रार्थना में शामिल होने के लिए जब किसी के पास कोई बहाना या आवश्यकता होती है (बीमारी या चोट), यदि आवश्यक हो, तो वह छोटी या लंबी दूरी की यात्रा करते समय उनके साथ शामिल हो सकता है, और जब बारिश हो रही हो या इसी तरह का कुछ, या जब वह बीमार हो या इसी तरह का कुछ, या अन्य कारणों से उनके साथ शामिल हो सकता है। इसके पीछे का मकसद मुस्लिम राष्ट्र को मुश्किलों से बचाना है।"^[2]

अनस इब्न मलकि ने कहा, "?? ?????? ?? ??? ?????? ?? ?????? ??, ?? ?? ?? ?? ?????? ????? ????? ?? ??
????????? ?? ??? ????? ??????????? ?? ????? (?????)???" [3]

उपवास करते समय रियायतें

रमजान के महीने में मुसलमानों के लिए उपवास रखना अनिवार्य है। यह इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है, फरि भी, यदि व्यक्ति बुजुर्ग या दुर्बल है, या कोई अन्य वास्तविक कारण है जैसे कि कोई पुरानी बीमारी, तो मुस्लिम को उपवास में रियायत दी गई है। उन्हें छूटे हुए उपवासों की भरपाई करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन रमजान महीने के प्रत्येक दिन एक गरीब व्यक्ति को खाना खलाना आवश्यक है। वह व्यक्ति जो उपवास के दौरान बीमार है लेकिन उसके ठीक होने की उम्मीद है, उसे या तो उपवास नहीं करने या अपना उपवास तोड़ने की अनुमति है; हालांकि उन्हें छूटे हुए उपवासों की भरपाई करना आवश्यक है।

"फरि यदि तुममें से कोई रोगी या यात्रा पर हो, तो उपवास के छोड़े गए दिनों को गनि के दूसरे दिनों में पूरा करे और जो उपवास को सहन न कर सके वो इसके बदले में एक गरीब व्यक्ति को खाना खलाये..." (कुरआन 2:184)

यात्री को उपवास न रखने या अपना उपवास तोड़ने की भी अनुमति है यदि वे इतने दूर की यात्रा कर रहे हैं कि उन्हें प्रार्थना को कम करने की आवश्यकता पड़े। हालांकि, उन्हें छूटे हुए दिनों की भरपाई करनी होगी। गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को अपना उपवास तोड़ने की अनुमति है यदि उन्हें अपने लिए, अपने शिशुओं या अपने अजन्मे बच्चों के लिए इसकी वजह से कोई चिंता है। गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को उन छूटे हुए दिनों की भरपाई करनी होगी जब उनकी परिस्थितियां या स्थितियां बदल जाएं।

हज (प्रमुख तीर्थयात्रा) में रियायतें

हज हर परिपक्व, समझदार और आर्थिक रूप से सक्षम मुस्लिम पर अनिवार्य है। इसे करने के लिए केवल वही लोग बाध्य हैं जिनके पास आवश्यक व्यवस्था और साधन हैं। इसमें बहुत गरीब और जरूरतमंद लोगों को छूट दी गई है। इसके अलावा, इसमें अन्य रियायतें भी दी गई हैं ताकि इस्लाम का यह स्तंभ कठिन न हो, और इसकी सभी समस्याएं समाप्त हो जाएं।

"तीर्थयात्रा मनुष्यों के लिए एक कर्तव्य है - जो यात्रा का खर्च उठा सकते हैं" (कुरआन 3:97)

यदतिरथयात्री बूढा है, दुर्बल है, या चलने में असमर्थ है, लेकिन अन्यथा स्वस्थ है, तो परविहन के अन्य रूप जैसे वहीलचेयर का उपयोग कर सकता है। पैगंबर मुहम्मद के समय में लोगों का गधे पर बैठ के काबा की परकिर्मा करना असामान्य नहीं था।

हज की रस्मों में से एक है रात भर मुजदलफिा में रहना और सूर्योदय के बाद मीना जा के कंकड़ फेंकना। हालांकि, ईश्वर ने बूढ़े, कमजोर और महिलाओं और बच्चों को रात में कंकड़ फेंकने की रघियात दी है।

यह उन रघियातों की पूरी सूची नहीं है जो ईश्वर ने वशिवासियों की कठनिाइयां कम करने के लिए दी है। ये उदाहरण यह बताने के लिए दिए गए हैं कि ईश्वर ने इस्लाम के अनविार्य स्तंभों में भी वशिवास करने वालों के लिए सुवधि और आराम रखा है।

फुटनोट:

[1] ????? ??-?????????

[2] मजमू'अल-फतावा (22/293)।

[3] ????? ??-????????, ????? ??????????

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/11361>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।